यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में मानवीय भावनाओ का सम्यक् विवेचन

सोमवीर

हिन्दी विभाग

महेन्द्रगढ, राजस्थान

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 9, Issue 6, (November-December 2021)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

सार

हिन्दी एंव राजस्थानी कथा साहित्य के प्रख्यात कथाकार राजस्थान के प्रेमचन्द माने जाने वाले यशस्वी व बहुमुखी प्रतिभा के धनी विशिष्ट रचनाकार यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का जन्म 15.08.1932 को राजस्थान के बीकानेर शहर में श्री चुन्नी लाल बिस्वा के घर में हुआ।शिक्षा प्राप्त कर कुछ दिन म्यूनिसिपल बोर्ड में कनिष्ठ लिपिक के पद पर कार्य किया। बाल्यावस्था से ही आपकी रूचि कथा साहित्य के पठन-पाठन में थी। अतः किशारावस्था से ही कहानियो की रचना प्रारम्भ कर दी। आरम्भ में कुछ कविताए भी लिखी। सेनानी, नई चेतना, लहर, चित्र भारती, सिने तस्वीर, फिल्मी भारत, रूप लेखा नामक पत्रिकाओं के प्रबन्ध संपादक के रूप में कार्य कर पत्रकार के रूप में आपने अपार यश अर्जित किया।

परिचय

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में सहानुभूति अबाध रूप से प्रवाहित होना जानती है। प्यास के पंख में एक धोबी जो उच्च वर्ग से निरन्तर पीटता था, अपमानित होता था वह अपनी माँ के शब्द याद करता है "हम शूद्र है, छोटे है, पण्डित जी का विरोध और अपमान करना हमारे लिए अधर्म है।" वह अपमान की आग में निरन्तर जलता रहता है। वह वकालात पास करके पुनः शहर में आता है तब उसी पण्डित बालूराम का बेटा एक चोरी के अपराध में पकडा जाता है तो वकील (धोबी) झूठ-सच करके उसे दो वर्ष का कठोर दण्ड दिलवा देता है। पाठको से सहानुभूमि वकील की मां के प्रति, बालूराम के बेटे के प्रति व बदला चुकाने के लिए वकील के प्रति भी होती है।

वीणा की सास गंगोत्री कहती है "बहू तूने मेरा पुत्र मुझसे छीन लिया, भगवान तुझसे तेरे पुत्रों को छीन ले।" ऐसा भयानक शाप ? पाठक की सहानुभूति उपेक्षित पात्र की क्रूरता के साथ भी हो सकती है। वीणा का यह कथन "इस छोटे से झगडे के कारण आप घर छोडकर न जाइए। मैं आपसे क्षमा मांगती हूँ।" उसके प्रति सहानुभूति बटोरता है।

'चन्द्र' के सभी उपन्यास मानवीय भावनाओ से ओत-प्रोत है। बडा आदमी में कुंठाओं का यथार्थ चित्रण भी रेखांकित करने योग्य हे। फतेह के लिए यह उक्ति "हम सब पैसे वाले है, हमारे बीच यह कंगला ठीक नही रहेगा।" कुंठाओं के पनपने का पर्याप्त आधार बनती है।

उपन्यासकार ने 'फतह' नामक चरित्र के माध्यम से स्पष्ट कर दिया कि "संस्कार नष्ट व्यक्ति में जब हीनता की ग्रंथि पनपती है तो उसकी परिणति पतनोन्मुखी ही होती है। फतेह का दुश्चरित्र होना, धन की अंधी लिप्सा, चारित्रिक पतन इसी के विविध आयाम है।"

'सावन आँखों में' के माध्यम से मातृत्व और प्रेम के बीच का संघर्ष उभारा गया तथा अविवाहित मातृत्व की पीडा को उजागर किया गया है "मैं मुन्ने की मौत से अपनी मांग नही भर सकती। अर्थी के आगे से अपनी डोली नही ले जा सकती।" इसमें वैवाहिक सम्बन्धों को लेकर एक नवीन सामाजिक दृष्टि को विकसित किया गया है। "हर औरत शादी कर सकती है लेकिन एक माँ शादी नही कर सकती।"

एक और मुख्यमंत्री में नायक अरविन्द बेरोजगार युवक होते हुए भी बेकारी के दिनों में आशावादी स्वप्न संजोता है "जमाना आने दो भाभी, आकाश के तारे भी तोडकर ले आऊंगा।" अरविन्द आगे चलकर अवसरवादी पात्र बनता है, महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हिन्दू महासभा का नेता बनकर शरणार्थियों के वोट बटोरता है, गुलाब नामक शरणार्थी युवती से शादी करके राजनीति व दान में ही शादी कर खेल खेलता है। मुख्यमंत्री बनने की अदम्य आकांक्षा रखता है। जब तक मतदाता नही समझेगा गलत व्यक्ति सता हथियाते रहेंगे, लेकिन कब तक ? इसका एक ही उतर है - आम जन में जागरण की चेतना आने तक। उपन्यास दर्शाता है कि अरविन्द "राजनीतिक कुचक्रो, जघन्य अपराधों, हीनगेथियों के कारण उत्पन्न कुंठाओं के कारण आत्मघात करके अपने सत्तालोलुप, महत्वाकांक्षी एंव विलासी जीवन का अंत कर लेता है।"

इस उपन्यास के माध्यम से हमारे देश की स्वातंत्रयों कालीन राजनीति में व्याप्त धूर्तता, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, राष्ट्रद्रोहिता, दल-बदल, राजनीति की विडम्बनाओं, नृशंसताओं, खोखले आदर्शो, व्याभिचारों एंव हमारे बनावटी जीवन से समबन्धित घटनाक्रम को प्रस्तुत करने में लेखक को प्रभूत सफलता मिली है। इसमें राजनीति की मक्कार शक्ल के बारे में विशद सूचनाउं देने का प्रयास किया गया है।

हजार घोड़ों का सवार उपन्यास दलित वर्ग की व्यथा, उपेक्षा और सामजिक स्थितियों का चित्रण करने वाला एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। बीसवीं सदी के प्रारम्भ से लेकर सन् 1952 तक के आम चुनाव तक की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थितियों का बेबाक और यथार्थपूर्ण चित्रण उपन्यास में मिलता है।"

इसी उपन्यास में उलगरजिया बाबा, विचारों में गंभीर, तार्किक व मानवीय संवेदनाओं से भरा पात्र है। वह इंसानों के बीच एकता-समता और भाईचारा का उद्घोष करता है। यह ईश्वर को मानता है पर आदमी के भीतर, वह जाति, धर्म, रंगभेद के सख्त विरूद्ध है। यह कहता है "जिस भूमि पर केवल जाति, धर्म और ऊँच-नीच रहते है, वहाँ आदमी कैसे रह सकता है। वह भूख को धर्म का

आधार मानता है। भूख ही हर धर्म की असलियत को बता देती है।" यह पात्र अछूतों को लडने-भिडने की प्रेरणा देता है, बेसहारों को सहरा देता है।

'चूनर की पीडा' में नारी जाति को स्वावलम्बी बनने के लिए जागृत करने की कोशिश की गई है "नारी का जीवन पालतु कुतिया की तरह है। नारी का जीवन उस परवश पंछी की तरह है जो पुरूष के पिंजरे में बंद है। नारी रोटी के लिए स्वावलम्बी नही है। समाज ने उसे अपनी बेड़ियों में जकड रखा है।"

पथहीन, दीया जला : दीया बुझा, जनानी ड्योड़ी, खम्भा अन्नदाता, मिट्टी का कलंक, न्यायदण्ड आदि अनेक उपन्यासों में ह्रसोन्मुखी सामंती संस्कृति एंव सभ्यता का चित्रण अत्यन्त सूक्ष्म, सजीव एंव प्रभावोत्पादक रूप में हुआ है। नारी के प्रति सामंती दृष्टिकोण खून का टीका में व्यक्त होता है। जनानी ड्योढ़ी का धतूरा सिंह अत्यन्त विलासी कामुक, जनशोषक के रूप में उभारा गया है। ऐसे पात्रों का अन्त होना चाहिए।

समाहार

'चन्द्र' के उपन्यासों में जीवन के प्रत्येक क्षैत्र की जटिल समस्याओं को इस प्रकार से उभारा गया है कि पाठकों, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारको, राजनेताओं, चिन्तको के मन में एक नवीन चेतना जागृत होती है। 'गुनाहों की देवी' में वेश्यावृति को कलंक निरूपित करके उसे समूल नष्ट करने की चेतना है। 'एक कमरे की कहानी', 'चेहरे मत उतारों', अलग-अलग आकृतियाँ में महानगरीय अकेलापन, अजनबीपन, भय, सत्रांस उजागर हुए है, साथ ही नारी का पीडा बोध भी चित्रित हुआ है। उनके उपन्यासों में कही, सामंती शोषण के बीच सिसकती नारी की छटपटाहट है तो कहीं नगरों एंव महानगरों में संघर्षरत नारी की व्यथा कथा है।

प्रवासी पति के इन्तजार में पीड़ा भोगी राजस्थानी नारी का चित्रण किसी भी सहृदयता को द्रवित करने में सक्षम है। मारवाडी धन्ना सेठों की कामुकता, विलासिता पाठकों के हृदय में जुगुप्सा का भाव जाग्रत कर ऐसे पात्रों को खलनायक साबित करती है। 'चन्द्र' का यह चित्रण सामाजिक चेतना का आधार स्तम्भ बना है। प्रेम, धर्म, विवाह, सम्भोग आदि पर लेखक का नवीन दृष्टिकोण नयी सामाजिक व्यूह रचना की ओर प्रेरित करता है। नयी सोच जीवन की गतिशीलता को सतत् प्रवाहकारी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान करती है।

भाँड, नट, ढ़ोली, बंजारा, कंजर, धोबी, चमार आदि जातियों के अनेक छुपे पक्षों को चित्रित करके 'चन्द्र' ने पाठको वास्तविकता से रूबरू कराया है। साथ ही इनके पुनर्वास की तरफ ध्यान आकर्षित कर पूर्ण सामाजिक चेतना का निरूपण किया है। कुल की मर्यादा, संतानोत्पति की कामना, तांत्रिकता, सतीत्व, पाप, पुण्य, यौन शोषण, दैहिक व्यापार के विविध पक्षों को देखा, परखा, समझा व विश्लेषित किया गया है। राजनीति में भी स्वच्छ वातावरण निर्माण की आकांक्षाएं व्यक्त हुई है। समग्र रूप में यह कहा जा सकता है कि यादवेन्द्र 'चन्द' के उपन्यास सामाजिक चेतना से ओतप्रोत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] डॉ॰ कुंवरचन्द्र प्रकाश सिंह : हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा, 1964।

[2] कृष्ण चन्द्र शर्मा : हरियाणा के कवि सूर्य लखमीचन्द, हरियाणा पब्लिकेशन, 1981।

[3] डॉ॰ कृष्ण चन्द्र शर्मा : लोककवि अहमद बख्श और उनकी रामायण सूर्यभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, 6।

[4] श्रीकृष्ण दास : लोकगीतों की सामाजिक व्यवस्था, साहित्य भवन लि॰ इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1956।

[5] डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय : लोकसाहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, प्रा॰ लि॰ इलाहाबाद, प्र॰सा॰, 1957।

[6] डॉ॰ कृष्णदेव शर्मा : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र।

[7] डॉ॰ केशो राम शर्मा : गन्धर्व पुरुष लखमीचन्द, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली, प्र॰सं॰ 2017।

[8] के॰सी॰ यादव : हरियाणा प्रदेश का इतिहास, मनोहर पब्लिकेशन, अंसारी रोड़, दिल्ली, प्र॰सं॰ 1981।

[9] के॰सी॰ यादव, हरियाणा का इतिहास एवं संस्कृति, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1986।

[10] डॉ॰ गुणपाल सांगवान : हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1989।